तात्पर्य

श्रीभगवान् क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के स्वरूप का प्रतिपादन कर रहे हैं। यह देह क्या है? किन पदार्थों से बना है? किसके आश्रय में कार्य करता है? किस-किस विकार को प्राप्त होता है? किस कारण से विकार को प्राप्त होता है? इसका हेतु तथा प्रयोजन क्या है? जीवात्मा का परम लक्ष्य क्या है तथा क्षेत्रज्ञ जीव का यथार्थ स्वरूप और प्रभाव कैसा है?—यह सम्पूर्ण तत्त्व जानने योग्य है। जीवात्मा और परमात्मा के भेद को उनके विविध प्रभावों और शक्तियों को जानना भी आवश्यक है। इस भगवद्गीता शास्त्र को साक्षात् श्रीभगवान् के वर्णन के अनुसार समझने से यह सम्पूर्ण तत्त्व हृदय में प्रकाशित हो जायगा। किन्तु ध्यान रहे कि प्रत्येक देह में अन्तर्यामी रूप से विराजमान भगवान् को जीव के समान मानने की भूल न कर बैठे। ऐसा मानना पुरुष और नपुंसक को एक सा बताने के जैसा होगा।

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः।।५।।

ऋषिभिः=तत्त्वज्ञ ऋषियों द्वारा; **बहुधा**=बहुत प्रकार से; **गीतम्**=कहा गया है अर्थात् वर्णन किया गया है; **छन्दोभिः**=वेदमन्त्रों से; **विविधैः**=नाना; **पृथक्**=विभागसहित; **ब्रह्मसूत्र पदैः**=वेदान्तसूत्रों के द्वारा; **च**=भी; **एव**=निस्सन्देह; **हेतुमद्भिः**=कार्य-कारण की युक्ति के साथ; **विनिश्चतैः**=भलीभाँति निश्चय किए हुए।

अनुवाद

वह क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान ऋषियों द्वारा बहुत प्रकार से कहा गया है और नाना प्रकार के वैदिक मन्त्रों में विभागपूर्वक वर्णित है; विशेषरूप से कार्य-कारण की युक्तिसहित भलीभाँति निश्चित वेदान्तसूत्र के द्वारा कहा गया है।।५।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण इस ज्ञान के परम प्रमाण हैं। तथापि, विद्वानों और प्रामाणिक आचार्यों की परिपाटी के अनुसार वे पूर्ववर्ती आचार्यों का प्रमाण उपस्थित करते हैं। जीव और परमात्मा में भेद है अथवा अभेद—इस परम विवादास्पद विषय का वे प्रामाणिक शास्त्रों, विशेषतः वेदान्त के आधार पर निर्णय कर रहे हैं। उनका पहला वाक्य है कि यह तत्त्व नाना ऋषियों को मान्य है। महर्षियों में प्रधान, व्यासदेव द्वारा प्रणीत वेदान्तसूत्र' ग्रन्थ से द्वैत पूर्ण रूप में सिद्ध हो जाता है। व्यासदेव के पिता महर्षि पराशर ने अपने धर्मग्रन्थ में कहा है, **अहं त्वं च अथान्ये . . .**, 'हम सभी अर्थात् मैं तुम और अन्य सब जीव, प्राकृत देह में स्थित होते हुए भी दिव्य हैं। अपने-अपने कर्मवश हम माया के गुणप्रवाह में पतित हो गए हैं। इसी से कुछ जीव सत्त्वादि उच्च योनियों में हैं तो कुछ को तमोमय अधम योनियाँ मिली हैं। अविद्या के कारण ही ये उच्च-निम्न गुण असंख्य जीवों में प्रकाशित हो रहे हैं। परन्तु अक्षर